रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–73, अंक : 38, 15-18 दिसम्बर 2016 तदनुसार 4 पौष सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मनुष्य बन

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥

–ऋ० १० ।५३ ।६

शब्दार्थ– रजसः=संसारक का **तन्तुम्**=ताना–बाना **तन्वन्**= तनता हुआ [भी] **भानुम्**=प्रकाश के **अनु+इहि**=पीछे जा। **धिया**=बुद्धि से **कृतान्**=बनाये, परिष्कृत किये हुए **ज्योतिष्मतः**=ज्योतिर्मय, प्रकाशयुक्त **पथः रक्ष**=मार्गों की रक्षा कर, **जोगुवाम्**=निरन्तर ज्ञान और कर्म का अनुष्ठान करने वालों के **अनुल्बणं**=उलझनरहित **अपः**=कर्मों को **वयत**=विस्तृत कर। [इन उपायों से] **मनुः भव**=मनुष्य बन [और] **दैव्यम्**=देवों् के हितकारी **जनम्**=जन को, सन्तान को **जनया**=उत्पन्न कर।

व्याख्या–संसार को जिसकी आवश्यकता रही है और रहेगी और इस समय भी जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है, उस तत्त्व का उपदेश इस मन्त्र में किया गया है। वेद में यदि और उपदेश न होता, केवल यही मन्त्र होता, तब भी वेद का आसन संसार के सभी मतों और सम्प्रदायों से उच्च रहता

वेद कहता है– **मनुर्भव**–मनुष्य बन!

आज का संसार ईसाई बनने पर बल देता है, अर्थात् ईसा का अनुसरण करने के लिए यत्नवान् है। संसार का एक बड़ा भाग बौद्ध बनने में लगा है, अर्थात बुद्ध के चरणचिन्हों पर चलता हुआ '**बुद्धं शरणं गच्छामि**' का नाद गुँजा रहा है। इसी प्रकार संसार का एक भाग मुहम्मद का अनुगमन करने में तत्पर है। महापुरुषों का अनुगमन प्रशंसनीय है, किन्तु थोड़ा–सा विचार करें तो एक विचित्र दृश्य सामने आता है, अद्भुत तमाशा देखने को मिलता है। ईसाई ने ईसा का नाम लेकर जो कुछ अपने भाइयों के साथ किया, उसकी स्मृति ही मनुष्य को कँपा देती है। बिल्ली के बच्चे तक की रक्षा करने वाले मुहम्मद की उम्मत का इतिहास भी भाईयों के रक्त से रञ्जित है। आः! जिसे मनुष्य कहते हैं, वह मनुष्यता का वैरी हो रहा है। हमने संकीर्णता के कारण संकुचित दल बना डाले, एक दल दूसरे दल को दलने–मसलने कुचलने पर तत्पर है। आज मनुष्य, मनुष्य का वैरी हो रहा है, अतः वेद कहता है– '**मनुर्भव**'–मनुष्य बन! ईसाई या बौद्ध या मुसलमान बनने या किसी दूसरे सम्प्रदाय में सम्मिलित होने में वह रस कहाँ जो 'मनुष्य' बनने में है! ईसाई बनने में केवल ईसाइयों को ममत्व से देखूँगा। बौद्ध बनने से और सबको असद्धर्मी मानूँगा। मुसलमान होकर मोमिनों को ही प्यार का अधिकारी मानूँगा, किन्तु मनुष्य बनने पर तो विश्व=सारा संसार मेरा परिवार होगा, सब पर मेरा एक समान प्यार होगा। वसुधा को कुटुम्ब माना तो सारे कुटुम्ब से प्यार करना चाहिए। कुटुम्ब में ममता का साम्राज्य होता है। विषमता का व्यवहार कुटुम्ब की एकतानता पर व्रज प्रहार है। ममता स्थिर रखने के लिए स्नेही का व्यवहार करना होता है। तभी तो वेद ने कहा–'**मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे**' [यजुः० ३६ ।१८]=सबको मित्र की स्नेहसनी दृष्टि से देखें।

यहाँ वेद मनुष्य–सीमा से भी आगे निकल गया है। प्यार का अधिकारी केवल मनुष्य नहीं रहा, वरन् सब भूत=प्राणी हो गए। यह उचित भी है, क्योंकि 'मनुष्य' शब्द का अर्थ है–'**मत्वा कर्माणि सीव्यति**' [निरु० ३ ।७]–जो विचारकर कर्म करे। कर्म करने से पूर्व जो भली प्रकार विचारे कि मेरे इस कर्म का फल क्या होगा? किस–किस पर इसका क्या–क्या प्रभाव होगा? यह कर्म भूतों के दुःख=प्राणियों की पीड़ा का कारण बनेगा, या भूतहित साधेगा?

मनुष्य यदि सचमुच मनुष्य बन जाए जो संसार सुखधाम बन जाए। देखिए, थोड़ा विचारिए, थोड़ा–सा मनुष्यत्व काम में लाइए। वेद के इस उपदेश के महत्त्व को हृदयङ्गम कीजिए। धार्मिक दृष्टि से विचारें तो मनुष्य–समाज के दो बड़े विभाग बन सकते हैं–ईश्वरवादी तथा अनीश्वरवादी।

(स्वाध्याय संदोह से साभार) क्रमशः

वर्ष 2017 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2017के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

–प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

आर्ष ग्रन्थ ही क्यों पढ़ें ?

-डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक' प्रधान, आर्यसमाज शृंगार नगर, लखनऊ

मनुष्य सोच-विचारकर चलता और मननपूर्वक कर्म करता है। इससे उसके जीवन में कदम-कदम पर दोराह आते हैं। ऐसा ही एक दोराहा है कि हमें सब ग्रन्थ पढ़ने चाहिए अथवा आर्ष ग्रन्थ ही पढ़ने चाहिए? इस पर मनीषी लोग समझाते हैं कि हमें आर्ष ग्रन्थ ही पढ़ने चाहिएं।

मनीषियों का आदेश तो स्पष्ट है; किन्तु हमें समझाया जाता है- **'विषात्-अपि-अमृतं ग्राह्यम्'** (विष में से भी अमृत का ग्रहण कर लेना चाहिए); 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (पृथ्वी भर के व्यक्ति हमारा कुटुम्ब हैं अर्थात् हम भेद-भाव न करें); **'स पर्यगात् शुक्रम्'** (परमात्मा सब में एक सा व्यापक है)। फिर पुस्तकों में क्या भेदभाव करना ? सभी ग्रन्थ पढ़ें। अच्छा-अच्छा अपना लें; बुरा-बुरा छोड़ दें। इसमें क्या दोष होता है ?

वस्तुतः पुस्तक का पढ़ना भौतिक कर्म नहीं है। पुस्तक को उठाना और कहीं रख देना भिन्न बात है। पुस्तक को पढ़ने से उसकी शिक्षा हमारे संस्कारों में जाती है। जैसे शराब पीने से पेट की आवश्यकता और मन की इच्छा ही पूर्ण नहीं होती वरन् शराब खून में जाकर मिलती है। इससे खून की प्रकृति बदल जाती है।

राम की हजार पीढ़ियों बाद तक एक परिवार में रामायण पढ़ी जाती थी और प्रत्येक व्यक्ति राम को अपना पूर्वज मानकर उन पर गर्व करता था। उसके बाद परिवार ने रामायण पर प्रतिबन्ध लगा दिया और विरोधी पुस्तक पढ़ी जाने लगी। तीन पीढ़ी बाद वे लोग बोले राम हमारा पूर्वज नहीं था। तनिक विचार करें कि वंशानुवंश बढ़ने से पूर्व-इतिहास तो नहीं बदलता; किन्तु पुस्तक के शब्द चिन्तन-मनन की प्रक्रिया से संस्कार बदल देते हैं।

विष और अमृत को अलग-अलग करके विष को छोड़ देना तथा अमृत के साथ लेश-मात्र विष लेना भी अविवेक है। हम विश्वभर को अपना परिवार समझें; किन्तु सत्य-असत्य को बराबर तोलें तो कैसे चलेगा? ईश्वर आस्तिक-नास्तिक में एक-सा व्यापक है? नास्तिक 99 बातों में आस्तिक के पीछे चले तो धर्म है। आस्तिक एक बात में नास्तिक के पीछे चले तो अधर्म हो जाएगा।

क्या पढ़ा-लिखा मनुष्य अनपढ़ मनुष्य से अधिक ईमानदार होता है ? क्या पठित अधिक सत्यवादी, संयमी, देश प्रेमी, ईशभक्त या धार्मिक होता है ? पांच वर्ष की आयु के 100 समान बालकों को लीजिए। उन्हें अलग-अलग पुस्तकें पढ़ाइये। तीस वर्ष की आयु में उनमें गम्भीर भेद होंगे और 95 व्यक्तियों से आप बस अलग ही रहना पसन्द करेंगे। अतः पुस्तकों का दोराहा महत्त्वपूर्ण है।

जो व्यक्ति सब पन्थों का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहता है या खण्डन-मण्डन करना चाहता है, उसका पठन-पाठन भिन्न होगा। परन्तु अधिकांश जन पुस्तकों से सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म, विद्या-अविद्या, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य आदि की शिक्षा लेना चाहते हैं। इन्हें यह नियम सर्वोपरि रखना होगा कि कैसे ग्रन्थ पढ़ें और कैसे ग्रन्थ न पढ़ें। ऐसा नियम न बनाने से सब गुड़ गोबर हो जाता है। इसी कारण मनुष्य-मनुष्य में, पन्थ-पन्थ में और जाति-जाति में निष्पक्ष रहने वाले महर्षि दयानन्द ने अनार्ष ग्रन्थों को अपाठ्य घोषित किया और केवल आर्ष ग्रन्थ ही पढ़ने को कहा है। यदि कोई स्वयं ही परीक्षण करना चाहे तो अनार्ष ग्रन्थों के कुछ वचन निम्नवत् दिये जा रहे हैं-

केवल चार तत्त्व-चार्वाक ने पृथिवी-जल-अग्नि-वायु, इन चार तत्त्वों को ही माना और आकाश को नहीं माना है। वह आकाश का इन्द्रियों से ग्रहण न होने के कारण इसे नहीं मानता। किन्तु आकाश तत्त्व के बिना कभी कहीं किसी का काम चल सकता है ? चार्वाक ईश्वर, जीव, पुनर्जन्म और वेद को भी नहीं मानता। उसका चिन्तन कितना अधूरा है।

जीव ईश्वर है-शंकराचार्य का कथन है-**'जीवो ब्रह्मैव नापरः'** अर्थात् जीव ब्रह्म ही है, उससे भिन्न कुछ नहीं। विडम्बना देखिये कि शंकराचार्य ब्रह्म और ईश्वर के लक्षण भी अलग-अलग बताते हैं। दूसरे शब्दों में उन्हें भिन्न मानते हैं। भला सदैव मुक्ति में और आनन्द में रहने वाले पवित्र स्वरूप ईश्वर को बन्ध-दुःख-अविद्या में पड़ने वाले जीव से भिन्न न मानना कितना बड़ा अविवेक है।

अहं ब्रह्मास्मि-शतपथ ब्राह्मण (काण्ड-14, प्रपाठक-3, ब्राह्मण-2, कण्डिका-18) में आता है-**'अहं मनुरभवं सूर्यश्चेति तदिद-मप्यतर्हि य एवं वेदाऽहं ब्रह्मा-स्मीति स इदं सर्वं भवति'**। इसके बीच में से शब्द उठाकर 'अहं ब्रह्मास्मि' का स्वतन्त्र वाक्य बना देना शंकराचार्य को शोभा नहीं देता। मूल वाक्य का ऐसा अर्थ नहीं है कि जीव कहे कि मैं ही ब्रह्म हूं। भला अमेरिका रूस के सैनिक एक-दूसरे से लड़ते समय 'अहं ब्रह्मास्मि' कहकर दिखाएं। आपके सामने सांप आ जाए तो 'अहं ब्रह्मास्मि' कौन है-आप या सांप? एक हत्यारा मृतक के परिवार में और बलात्कारी न्यायालय में जाकर 'अहं ब्रह्मास्मि' कह सकता है क्या ?

ईश्वर ही कर्त्ता, जीव नहीं-अद्वैतवादी कहते हैं कि ईश्वर ही कर्त्ता है, जीव नहीं। यह भी अनार्ष ग्रन्थों की कुशिक्षा की पोल खोलता है। तनिक युद्ध-क्षेत्र में, खेल के मैदान में, राजनीतिक निर्वाचन में, सड़क-निर्माण में या परीक्षा-भवन कोई व्यक्ति हाथ पर हाथ रखकर बैठा रहे और ईश्वर को ही कर्त्ता मानकर दिखाए। ईश्वर कर्त्ता है किन्तु अपने कर्मों के कर्त्ता हैं और तदनुरूप भोक्ता हैं। ईश्वर जीवों के कर्मों का कर्त्ता नहीं है।

जीव ईश्वर का अंश है-रामानुजाचार्य ने शंकराचार्य के 'जीव ईश्वर है' इस कथन को नहीं माना और जीव को ईश्वर का अंश बता दिया। बाद में तुलसीदास ने इस मान्यता को और प्रसिद्ध कर दिया। ईश्वर चेतन है, अखण्ड है, सूक्ष्मतम है और पवित्रस्वरूप है। उसके अंश या भाग नहीं हो सकते। फिर भी, आस्तिक जगत् के अधिकांश व्यक्ति जीव को ईश्वर का अंश मानते हैं और आर्य समाज के समझाने पर भी अपना दुराग्रह नहीं छोड़ते। यह अनार्ष ग्रन्थों के विषैलेपन का स्पष्ट प्रमाण है।

मूर्ति में ईश्वर है-मूर्ति में ईश्वर का होना मूर्ति को पूज्य नहीं बनाता। ईश्वर जैसा राम की मूर्ति में है, वैसा ही रावण की मूर्ति में भी है। यदि एक मूर्ति में देव राक्षस को मार रहा है, तो ईश्वर देव-रूपी और राक्षस-रूपी दोनों भागों में एक-सा है। ईश्वर जैसा मूर्ति में है वैसा ही फर्श, छत, मन्दिर, मस्जिद, सड़क, घाट, चकले, बेलन, अमृत, विष, कुदाल, फावड़े हवा और पानी में है। ईश्वर जैसा मूर्ति में है, वैसा ही प्रत्येक जीव और प्रत्येक परमाणु में है। क्या आप यह सब समझकर उपासना कर रहे हैं या बिना समझे?

मिट्टी में भी जीव ?-जैन-दर्शन मिट्टी-पत्थर में भी जीव मानता है। यह आर्ष-सिद्धान्तों के विरुद्ध है। आर्ष-ग्रन्थों के अनुसार प्राणियों में जीव है। पृथिवी-जल-अग्नि-वायु-आकाश में जीव नहीं है। जो अनार्ष ग्रन्थ मिट्टी-पत्थर और जड़ परमाणुओं में जीव मानते हों, उनका खण्डन करना मानव-धर्म है। ऐसा खण्डन सुख उत्पन्न करेगा; चुप रहना दुःख को बनाये रखेगा; मण्डन तो खैर दुःख उपजायेगा ही।

स्थायी आत्मा नहीं-बौद्ध-दर्शन परमात्मा को नहीं मानता, जड़ पदार्थ को नहीं मानता, पुनर्जन्म को मानता है, किन्तु स्थायी आत्मा को नहीं मानता। इसकी मान्यता है कि पदार्थ क्षण-क्षण बदलते और आत्मा भी क्षण-क्षण बदलती है। भला स्थायी आत्मा न हो तो पुनर्जन्म किसका होगा ? परन्तु अनार्ष विचारों के विषय में क्या कहा जा सकता है कि किस सीमा तक संस्कार खराब करेंगे।

बिग बैंग थ्योरी-विज्ञान का काम इन्द्रिय-प्रमाणित सत्य बोलना है, न कि कल्पना-जनित निबन्ध लिखना। परन्तु ईश्वर नहीं है, चेतन आत्मा कुछ नहीं होती, जगत् स्वयमेव बनता-मिटता है, बन्दर ही सुधार कर मनुष्य बन गया है इत्यादि, ये ऐसे ही कल्पना जनित निबन्ध हैं। विज्ञान यह कहे कि

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय.....

भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों का समावेश

मानव की श्रेष्ठ साधनाओं को यदि हम संस्कृति की संज्ञा प्रदान करें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आदि काल से ही मनुष्य अपने जीवन को उन्नत करने के लिए जो प्रयोग करता आया है उनमें जो सर्वश्रेष्ठ हैं वे ही मिलकर मानव संस्कृति कहलाते हैं। संसार की विभिन्न जातियों ने अपने-अपने क्षेत्र में रहकर मानव संस्कृति के विकास में जो योगदान दिया है वह जातीय संस्कृति है। वास्तविकता तो यह है कि विभिन्न संस्कृतियों का उद्देश्य अंतत: एक व्यापक मानव संस्कृति का निर्माण है। इस दृष्टि से मानव संस्कृति के गठन में जिस जातीय संस्कृति का जितना अधिक योगदान होगा वह उतनी ही महान् कहलाएगी। इससे यह परिणाम निकलता है कि जाति का दृष्टिकोण क्षुद्र सीमाओं को नकारते हुए जितना अधिक मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होगा उतना ही अधिक वह विश्व हित को गौरव प्रदान करेगा। भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों की इतनी प्रधानता है कि वह विश्व में सर्वाधिक गौरव की अधिकारिणी है। संसार के मनीषी धीरे-धीरे यह स्वीकार करते जा रहे हैं कि भारतीय संस्कृति ही विश्व संस्कृति बनने के योग्य है। भारतीय संस्कृति ने आरम्भ से इन्द्रिय मन तथा बुद्धि से प्राप्त अनुभव को चरम सत्य न मानकर आत्मा से प्राप्त अनुभव को सत्य रूप में स्वीकार किया है। आत्मा से अधिक सूक्ष्म और कुछ नहीं है इसीलिए आत्मा का आधार लेकर चलने वाली भारतीय संस्कृति विश्वमानव का सर्वाधिक कल्याण करने की योग्यता रखती है।

योगीराज श्रीकृष्ण ने गीता में निम्न गुणों को मानव के लिए सर्वाधिक कल्याणकारी व ग्राह्य बताया है वे हैं निर्भयता, अन्त:करण की स्वच्छता, तत्व ज्ञान को जानने का एकाग्रचित्त होकर निरन्तर प्रयत्न, दान, इन्द्रियों का दमन, धन, स्वाध्याय, तप, मन-वचन-कर्म की बद्धता, अहिंसा, सत्यभाषण, क्रोधहीनता, त्याग, चित्त की शान्ति, किसी की निन्दा न करना, सब प्राणियों पर दया, विषयों में अनासक्ति, कोमलता, अनुचित्त कर्मों में लज्जा, तेज, क्षमा, धैर्य, सत्व गुण की प्रधानता, अहंकार का त्याग। संसार में जितने भी मानवीय गुणों की कल्पना की जा सकती है वे सब यहां परिगणित हैं। इन्हीं गुणों के आधार पर भारतीय संस्कृति का राजप्रसाद निर्मित हुआ है।

भारतीय संस्कृति ने धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को पुरूषार्थ स्वीकार किया है। यदि ध्यान से देखा जाए तो ये पुरूषार्थ भारतीय संस्कृति के अक्षय मूल्य हैं जिनसे मनुष्य अंत में आवागमन के चक्र से छूटकर मोक्ष प्राप्त करता है। परमात्मा समस्त विश्व में व्यापत है। यह हमारी सनातन मान्यता है अत: भारतीय संस्कृति में किसी भी प्राणी के प्रति वैर या हिंसा का प्रश्न नहीं उठता। यदि हम किसी के प्रति वैर की भावना न रखे तो इससे सहिष्णुता समन्वय व विश्व कल्याण की मंगल कामना आदि भावों का उदय होता है। हमारी संस्कृति में तो सबके अभ्युदय की कामना करते हुए कहा जाता है कि-

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग्भवेत्।।

यही नहीं अपितु शांतिपाठ में हमारा ऋषि सम्पूर्ण विश्व के लिए शान्ति व सुख की कामना करता है। वह जल, वनस्पति, पृथ्वी, अन्तरिक्ष, द्युलोक जीव जड़ आदि विश्व के समस्त जड़ चेतन पदार्थों के शान्ति का अभिलाषी है। इससे अधिक उदार एवं उदात्त भावना भारतीय संस्कृति से परे और कहां मिल सकती है। भारतीय संस्कृति यह भी मानती है कि मनुष्य जैसा कर्म करेगा उसी के अपुरूप फल भी प्राप्त करेगा। अत: मानव को सत्कर्मों द्वारा अपने जीवन को सुखी बना कर अपना भावी जीवन भी सुधारना चाहिए। यदि अगला जीवन उच्चतर पाना है तो मनुष्य को अपने वर्तमान जीवन को शुभ कर्मों से आलोकित करना चाहिए। यदि जन्म-मरण के चक्र से छूटना हो तो निष्काम कर्म का मार्ग अपनाना चाहिए। इन सिद्धान्तों के द्वारा भारतीय संस्कृति ने मानव में आशावाद जगाकर उसे उच्चतर जीवन जीने की प्रेरणा दी और भोग की अपेक्षा त्याग को श्रेष्ठ मानने का भाव जगाया।

प्राचीन भारतीय वर्णाश्रम व्यवस्था में भी नैतिक मूल्यों के ही प्रतिपादन का प्रयास किया गया है। वर्णाश्रम व्यवस्था के द्वारा व्यक्ति और समाज के चरमोत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त किया गया है। ब्रह्मचर्य आश्रम में व्यक्ति जीवन को संयमित कर ज्ञानार्जन करता है, गृहस्थाश्रम में धर्मानुकूल वह संसारिक सुखों का सेवन करता है तथा शेष दो आश्रमों में समाज के कल्याण के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करता है। इसी प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण गुण कर्म की दृष्टि से बने हुए थे। इसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति को अवसर मिलता था कि वह अपनी शक्ति के अनुसार व्यवस्था का चुनाव कर अपनी व समाज की उन्नति करें। इस प्रकार भारतीय संस्कृति ने श्रेष्ठ बातों का समन्वय करके मानव को उसके जीवन का सर्वोच्च दर्शन प्रदान किया और उस दर्शन को व्यवहार में परिणत कर महान् लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग भी सुनिश्चित कर दिखाया। वस्तुत: भारतीय संस्कृति की गाथा सम्पूर्ण मानवता की गौरव गाथा है।

भारतीय संस्कृति मूलत: धार्मिक व दार्शनिक रही है। प्राचीन भारत में विशेषकर वैदिक काल में जब धर्म और दर्शन अपनी ऊंचाई पर थे उस समय के भारतवासी आर्य, प्राचीन सभ्यताओं की भौतिक प्रगति की तुलना में आध्यात्मिक प्रगति को अधिक महत्व देते थे। भारतीयों के लिए धर्म से बढ़कर कुछ नहीं है। धर्म रक्षा के लिए जान देने वालों की कथाओं से इतिहास भरे पड़े हैं। गीता में श्रीकृष्ण के अनुसार-स्वधर्मे निधनं श्रेय: परधर्मो भयावह: अर्थात् स्वधर्म में मृत्यु भी हो जाए तो वह भी श्रेयस्कर है। इसी भावना के अनुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्य सिद्धान्तों को स्थापित करते हुए आर्य समाज की स्थापना की और हमारी संस्कृति के मूल वैदिक सिद्धान्तों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया। कितने प्रलोभन मिलने पर, कितनी बार विरोधियों के द्वारा जहर देने पर भी वे अपने सिद्धान्त और मन्तव्यों से पीछे नहीं हटे। उन्हीं का अनुसरण करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम आदि ने भी अपने-अपने बलिदान दिए।

वैदिक धर्म वास्तव में भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसमें धर्म के दृष्टिकोण से संकीर्णता नहीं है। उदारता के कारण इसमें विभिन्न विचारों के लोगों का समावेश है जो विपरीत विचारधारा रखते हुए भी वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को स्वीकार करते हैं। संकीर्ण विचारधाराओं के दायरे में प्रतिबन्धित न होने के कारण इसके उपदेश, सिद्धान्त मौलिक हैं।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री

मनुष्य व समाज की प्रमुख शत्रु अविद्या

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

सामान्यत: सत्य ज्ञान को विद्या और विपरीत या मिथ्या ज्ञान को अविद्या कहते हैं। वेद का एक अर्थ जानना व ज्ञान भी होता है। मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति माता-पिता व आचार्य के उपदेशों सहित वेद और सत्य वैदिक साहित्य को पढ़कर उसका सम्याक् ज्ञान होने पर होती है। ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों को विद्वान कहते हैं। इसके विपरीत जिनके माता-पिता व आचार्य वेद और वेदानुकूल शास्त्रों का ज्ञान न रखते हों, जिन्हें वेदों की सत्परम्परा से ज्ञान प्राप्त न हुआ हो, तो ऐसी सन्तानें स्कूलों व कालेजों में अनेक विषयों को पढ़कर ज्ञानी अवश्य बन जायें परन्तु मनुष्य जीवन को अभ्युदय व नि:श्रेयस प्राप्त करने के लिए जिस सत्य विद्या व ज्ञान की आवश्यकता होती है वह तो केवल वेद और वैदिक साहित्य से ही प्राप्त होता है। वर्तमान काल पर विचार करें तो वेदानुकूल सभी शास्त्रों का निचोड़ अमृत व नवनीत के समान लोकभाषा हिन्दी भाषा में उपलब्ध 'सत्यार्थप्रकाश' एक ऐसा ही ग्रन्थ है जिसे पढ़कर वैदिक सत्य सिद्धान्तों से परिचित हुआ जा सकता है और अपने जीवन को सन्मार्ग पर चलाकर अभ्युदय और नि:श्रेयस को प्राप्त किया जा सकता है। सत्यार्थप्रकाश पढ़ने से मनुष्य में सद्ज्ञान वा विवेक की प्राप्ति होती है। यह सद् ज्ञान व विवेक समाधि अवस्था में प्राप्त होने वाले विवेक ज्ञान से कुछ भिन्न हो सकता है परन्तु है उसका पूरक ही। यह कह सकते हैं कि क्योंकि सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ एक समाधि सिद्ध योगी और वेद मर्मज्ञ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने बनाया है, अत: इसमें उन्होंने जो ज्ञान प्रस्तुत किया है। वह उन्हें समाधि में प्राप्त होने वाले विवेक ज्ञान का ही प्रतिरूप होने से यह भी एक प्रकार समाधि में प्राप्त विवेक ज्ञान ही है जो मनुष्य की सार्वत्रिक उन्नति करने में सक्षम है।

हमारे देश व देशान्तर में बहुत से लोग हैं जो वेद और सत्यार्थ-प्रकाश से अपरिचित हैं। वह जीवन में अपनी आत्मा की प्रेरणा के अनुरुप सत्य व्यवहार करते हुए अनुशासित जीवन व्यतीत करते हैं। वह सभी प्रशंसा के पात्र हैं परन्तु वेदाध्ययन से अयुक्त व दूर होने के कारण वह जीवन व्यवहार, चरित्र व भोजन आदि के नियमों को भली प्रकार से नहीं जानते। ऐसे अच्छे लोग भी अविद्या से ग्रस्त ही होते हैं। उन्हें यह ज्ञान नहीं होता कि उनका मनुष्य जन्म किन कारणों से व किन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये हुआ है। सब प्राणियों का जीवन दाता कौन है व उसका स्वरूप कैसा है ? इससे भी संसार के लोग अपरिचित हैं।

अत: इस कारण वह सभ्य बन्धु उस मार्ग को नहीं जानते जो जीवन के यथार्थ उद्देश्य का ज्ञान एवं उसकी प्राप्ति कराता है। इसका निर्णय या तो वेद और वैदिक साहित्य पढ़कर होता है या इन सब प्रश्नों के उत्तर सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर भी जाने जा सकते हैं। वेद पुनर्जन्म को मानते हैं। मनुष्य का जीवात्मा सत्य, चेतन, अल्पज्ञ, अनादि, अनुत्पन्न, नित्य, अजर, अमर, एकदेशी, ससीम, स्वतन्त्र कर्ता, फल भोगने में ईश्वर के अधीन है। वह सत्कर्मों व योगाभ्यास से समाधि को सिद्ध कर विवेक प्राप्त करता और इससे मोक्ष सिद्ध करता है। असत्य व अज्ञानता में फंस कर जीवात्मा लोभवश अशुभ व हेय स्वार्थ पूर्ति के कर्मों को करके वह कर्म फल बन्धनों में फंस जाता है जिससे कर्मानुसार मृत्योत्तर काल में अनेक जन्मों में अनेकानेक योनियों में जन्म प्राप्त करता है। सत्य मार्ग व पथ का बोध न होने का कारण अविद्या है जो वेद व वैदिक ज्ञान की प्राप्ति से ही दूर होती हैं। इसके लिए मनुष्य के माता-पिता व आचार्य का वेदों का जानकार व ज्ञानी होना आवश्यक हैं तथा मनुष्यों को भी अधिकाधिक पुरुषार्थ करना होता है।

महाभारत युद्ध में बड़ी संख्या में विद्वानों की मृत्यु हो जाने के कारण देश देशान्तर में अविद्या का अन्धकार फैल गया था। जिससे मनुष्य ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के स्वरूप को भूलने के साथ धर्म व अधर्म का भेद भी भूल गया। अज्ञानता के कारण उसने जिन मतों का सृजन किया, उसमें अविद्या निहित होने से अन्धविश्वास उत्पन्न हो गये। समय के साथ मतों व अन्धविश्वासों की संख्या बढ़ने लगी। भारत अनेक मतों, सम्प्रदायों व समुदायों सहित मिथ्या परम्पराओं में आबद्ध हो गया। ईश्वर की यथार्थ पूजा को भूला दिया गया। पूर्ण रूप से अहिंसक वैदिक यज्ञों में हिंसा होने लगी जो बौद्ध व जैन मतों के प्रादुर्भाव का आधार बनी। इसी प्रकार से विदेशों में पारसी, ईसाई व इस्लाम मतों का आविर्भाव हुआ परन्तु किसी भी मत में वेदों की समस्त सच्चाईयां विद्यमान नहीं थी। कुछ भारतीय मत तो पुनर्जन्म को मानते हैं परन्तु विदेशों में उत्पन्न मत पुनर्जन्म को नहीं मानते। हमारे देश में मांसाहार निन्दनीय था जबकि विदेशी नाना पशुओं के मांस के आहार के दोषों से अपरिचित होने के कारण इसका सेवन करते आ रहे हैं। ईश्वर व जीवात्मा का सत्य स्वरूप भी किसी मत में स्पष्ट रूप से वर्णित नहीं है। काम, क्रोध, लोभ व मोह की वृत्तियों के कारण समाज में परस्पर द्वेष व स्वार्थ बढ़ते गये जिसने मनुष्य समाज को संगठित व एकजुट करने के स्थान पर असंगठित और विकृत कर दिया। सभी मत व सम्प्रदाय परस्पर एक दूसरे के शत्रु हो गये। ईश्वर के सत्य स्वरूप को भुलाकर पाषाण आदि की मूर्तियों की पूजा होने लगी। अजन्मा, नस-नाड़ी व शरीर के बन्धन से रहित ईश्वर का अवतार माना जाने लगा। कालान्तर में मृतकों का श्राद्ध भी किया जाने लगा। समाज को कृत्रिम जन्मना जातियों के आधार पर बांट दिया गया और उनमें अस्पृश्यता व छुआछूत आदि प्रचलित हो गये। बाल विवाह व बेमेल विवाह भी प्रचलित हो गये। ब्राह्मणों ने वेदों का अध्ययन करना छोड़ दिया। उन्होंने स्त्री व शूद्रों को भी वेदाधिकार व शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया। इससे अनेकानेक अन्धविश्वास उत्पन्न हुए जिनका कारण अविद्या था। इससे समाज और देश का घोर पतन हुआ। किसी सामान्य या विशेष पुरुष ने इस अविद्या को दूर करने की औषधि रूप वेद ज्ञान की प्राप्ति की चेष्टा नहीं की। सबने अपने-अपने अन्धविश्वासों से युक्त मतों को ही ईश्वर प्रेरित मान लिया और अन्धविश्वासों को दूर करने की बात तो दूर है, उन पर विचार करने और शंका करने को भी बुरा माना जाने लगा। मत-पन्थ की मिथ्या मान्यताओं पर शंका करने पर दण्ड कठोर दिया जाने लगा। आज भी ईश निन्दा जैसे कानूनों की चर्चा सुनते रहते हैं। इनका परिणाम यह हुआ कि संसार के मनुष्यों में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी आदि भेद उत्पन्न हो गये। वर्तमान में आलम यह है कि कोई भी व्यक्ति व महापुरुष इन मतों के एकीकरण, विलय व ज्ञान के आधार पर एक सत्यमत स्थापित करने पर विचार ही नहीं करते। आज तो देश में वोट बैंक ओर तुष्टिकरण का युग है। आम व सच्चे मनुष्यों का हित गौण हो गया है। ईश्वर और कर्म-फल व्यवस्था का कहीं किसी को कोई भय नहीं है। आर्यसमाज को यह गौरव प्राप्त है कि उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश लिखकर व वेदों की सच्ची शिक्षाओं, मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रचार कर सत्य मत की स्थापना का प्रयास किया। उनको सफलता इसलिए नहीं मिली की अधिकांश लोग अपने-अपने मत के प्रति पूर्वाग्रही थे। अनेक मतों के आचार्यों से ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के विद्वानों के शास्त्रार्थ, चर्चायें और शंका समाधान भी हुए परन्तु वेद विरोधियों के असफल होने पर भी सत्य मत वेद को स्वीकार नहीं किया गया। हां, सभी मतों से

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पूर्णता की ओर अग्रसर हम सब

-पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

संसार के सृष्टिक्रम को चलाने की ईश्वर की अद्भुत व्यवस्था है। सृष्टिक्रम का प्रत्येक कार्य नियमित और निर्धारित समय से हो रहा है। ईश्वर की निश्चित व्यवस्थानुसार व विज्ञान के अनुसार सृष्टिक्रम चल रहा है। ज्ञान विज्ञान का समन्वय से संचालन हो रहा है। युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे, उन्होंने ईश्वरीय व्यवस्थानुसार व सृष्टि क्रमानुसार विज्ञान के अनुसार संसार को सत्य ज्ञान कराया है।

पूर्णता को प्राप्त करना है मानव जीवन का परम लक्ष्य है। न केवल चेतन समुदाय अपितु सृष्टि का प्रत्येक कण इसके लिये लालयित और गतिशील हैं भौतिक जीवन में जिसके पास स्वल्प सम्पदा है वह अधिक की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील है। बड़े-बड़े सम्राट अपनी इस अपूर्णता को पाटने के लिये दूसरे साम्राज्यों को लूटते रहते हैं। लगता है संसार का हर प्राणी साधनों की दृष्टि से अपूर्ण है, और सभी पूर्णता को प्राप्त करना चाहते हैं।

इतिहास का विद्यार्थी अपने आपको गणित या विज्ञान में शून्य पाता है। भूगोल का संगीत में, वकील डाक्टरी में, यानि जीवन की विद्या में हर कोई अपूर्ण है और हर कोई अगाध ज्ञान का पंडित बनने को तत्पर दिखाई देता है। नदियां पूर्णता को प्राप्त करने के लिये सागर की ओर वृक्ष आकाश की ओर, धरती भी स्वयं न जाने किस गन्तव्य की ओर अधर में आकाश में भागी जा रही है। अपूर्णता की दौड़ में समूचा सौर मण्डल उससे परे का अदृश्य संसार में भी सम्मलित है। पूर्णता प्राप्त करने की बैचैनी न होती तो सम्भवत: विश्व ब्रह्माण्ड में रती भर भी सक्रियता न होती, सर्वत्र नीरव व सुनसान पड़ा रहता, न समुद्र उबलता न मेघ बरसते न वृक्ष उगते, न तारागण चमकते और न वह विराट की प्रदिक्षिणा में मारे मारे घूमते।

जीवन की साथर्कता पूर्णता प्राप्ति में है, इसका तात्पर्य यह हुआ कि अभी हम अपूर्ण है और असत्य और अन्धकार में है। हमारे सामने मृत्यु मुंह वाये खड़ी है। हर कोई अपने आप को अशक्त और असहाय पाता है, अज्ञान के अन्धकार में हाथ पैर पटकता रहता है।

इस अपूर्णता पर जब कभी विचार आता है। तब एक तथ्य सामने आता है और वह है परमात्मा अर्थात् एक ऐसी सर्वोपरि सर्व-शक्तिमान सत्ता जिसके लिये कुछ भी अपूर्ण नहीं है वह सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी सर्वद्रष्टा, नियामक और एक मात्र अपनी इच्छा से सम्पूर्ण सृष्टि में संचरण कर सकने की क्षमता में ओत प्रोत है।

पूर्णमद: पूर्णमिंद पूर्णातपूर्ण मुदच्यते-।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा-वशिष्यते। (उपनिषद शान्ति पाठ)

ओं पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत-।

वस्नेव विक्रीणा वहा इष्मूर्ज-शतक्रतो-।। (यजु० 3-49)

अर्थात् पूर्ण परब्रह्म परमात्मा से पूर्ण जगत पूर्ण मानव की उत्पति हुई। पूर्ण से पूर्ण निकाल देने पर पूर्ण ही शेष रह जाता है।

जिस प्रकार नदी का एक किनारा समुद्र से जुड़ा रहता है और दूसरा किनारा उससे दूर रहता है, दूर रहते हुए भी नदी समुद्र से अलग नहीं है। नदी को जल समुद्र द्वारा प्राप्त होता है और पुन: समुद्र में मिल जाता है। जगत उस पूर्ण ब्रह्म से अलग नहीं है। मनुष्य उसी पूर्ण ब्रह्म से उत्पन्न हुआ इसलिए वह अपने में स्वयं पूर्ण है। यदि इस पूर्णता का भान नहीं होता, यदि मनुष्य कष्ट और दु:खों से त्राण नहीं पाता तो इसका मात्र कारण उसका अज्ञान और अहंकार में पड़े रहना ही हो सकता है। इतने पर भी पूर्णता हर मनुष्य की आन्तरिक अभिलाषा है और वह नैसर्गिक रुप में हर किसी में विद्यमान रहती है।

प्रगति और पूर्णता का लक्ष्य बिन्दु 'देवत्व' प्राप्त करना है-

क्षुद्रता और परिधि को तोड़ कर पूर्णता प्राप्त कर लेना हर किसी के लिये सम्भव है। मनुष्य की चेतनसत्ता में वह क्षमता मौजूद है, जिसके सहारे वह अपने स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीरों को विकसित कर देवत्व को प्राप्त कर सकता है। षटचक्रों एवं पंच कोषो में समाहित विलक्षण क्षमताओं सिद्धियों का स्वामी बन सकता है। यही क्षमता को प्राप्त करना देवत्व की ओर जाना है। जबकि क्षमता की दृष्टि में वह उतना ही परिपूर्ण है जितना उसका सृजेता। इस चरम लक्ष्य की ओर ज्ञात अज्ञात रुप से हर कोई अग्रसर है।

विकास इस सृष्टि की सुनियोजित व्यवस्था है। पदार्थ और प्राणी अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुरुप अपने-अपने ढंग से विकास कर रहे हैं। मनुष्य में देवत्व के उदय की यह संभावना विचार विज्ञान एवं ब्रह्म विद्या की परिधि में आती है। व्यक्तित्व का परिष्कार अध्यात्म जगत का परम पुरुषार्थ माना गया है।

''मैं'' के जानने में ही ज्ञान की पूर्णता है

मैं के साथ मेरा है। जो घमन्ड के साथ कहता है कि मैंने ऐसे किया, ऐसा कर दूंगा। इस नश्वर शरीर को शोभा नहीं देता। इस शरीर का वास्तविक मालिक ईश्वर है। हम दुनिया को जानने की कोशिश में लगे रहते हैं। और संसार के साथ सम्बन्ध कायम करने में लगे रहते हैं। किन्तु स्वयं अपने को जानने का कभी प्रयत्न नहीं करते। हम इस साकार ईश्वर के अंग है साकार से हमारा अभिप्राय: प्रकृति के अंग है, यह सारा विश्व हमारा शरीर है। इस ज्ञान का नाम ही मैं है। मैं है वह परमात्मा सत्ता। इस सत्ता को जानना ही आस्तिकता है। अत: अपने आप को जानकर अपना स्वयं का ज्ञान होना आवश्यक है। मैं क्या हूँ ? मैं कौन हूँ ? मैं क्यों हूँ ? इन छोटे से प्रश्न का समाधान न कर सकने के कारण ''मैं'' को कितनी विषम विडम्बनाओं में उलझना पड़ता है।

यदि मैं शरीर हूँ तो उसका अन्त क्या है ? लक्ष्य क्या है ? परिणाम क्या है ? मृत्यु-मृत्यु-मृत्यु।

क्या वास्तव में ''मैं'' की मृत्यु हो जायेगी। ''नहीं'' क्योंकि जब तक शरीर में आत्मा रहती है तभी तक मनुष्य मैं का उच्चारण करता रहता हैं। जैसे ही आत्मा शरीर से बाहर हुई मैं का मेरे का सम्बोधन भी समाप्त हो जाता है।

आत्मा को जानिए

आत्मा ही जरा-मरण, भूख प्यास समस्त भय सन्देह संकल्प-विकल्पों से रहित नित्य मुक्त, अजर, अविनाशी तत्व है। उसे जान लेने पर ही मनुष्य समस्त भय शोक, चिन्ता कलेशों से मुक्त हो जाता है। आत्मा सर्वव्यापी नित्य तत्व है। आत्मा ही मानव जीवन का मूल सत्य है। आत्मा के पटल पर ही संसार और दृश्य जीवन का छाया नाटक बनता बिगड़ता रहता है।

अध्यात्म ब्रह्म (वृ० उप्र०) सर्वव्यापी विराट आत्म सत्ता ही ब्रह्म है। ऐसा उपनिषिदकार ने अपनी अनुभूति के आधार पर कहा है। जिसने आत्मा को जान लिया उसने ईश्वर को जान लिया आत्म तत्व जब जगत देह इन्द्रिय तथा संसार के पदार्थों को प्रकाशित करता है। जो अनेक रुपों में दिखाई देता है। जैसे जल की बूदें समुद्र पर गिरते समय अलग-अलग दिखाई देती है, किन्तु गिरने से पूर्व और गिरने पर वह अथाह सिन्धु के रुप में होती है।

सत-चित-आनन्द पूर्णता की ओर ले जाते हैं

सत: परमात्मा के अनेक नामों में से एक नाम है, सच्चिदानन्द सत् अर्थात्-यथार्थता। यथार्थता का अर्थ सत्य को जानना, ऋत सत्य का ज्ञान होना और अपने जीवन को सत्य मार्ग अर्थात् ईश्वरीय आज्ञानुसार चलाना, सतपथ कहा जाता है।

चित : अर्थात् चेतना ही मनुष्य का स्वरुप है। उसी के साथ कठिन और जटिल उलझनों का निर्माता एवं समाधान से जुड़ा हुआ है। सदैव सत्य की ओर चित्त को ले जाना ही समस्याओं का समाधान है।

आनन्द : जिसमें प्रति प्रसन्नता न्यून या अधिक आनन्द का आधार कारण रुप प्रकृति है बस प्रकृति से ऊपर उठ कर चित्त को सच्चिदानन्द में सदैव लगा देने पर ही परमानन्द की अनुभूति होती है।

अत: महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें वेदों की शिक्षा देकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्ग पर चल कर पूर्णता की ओर जाने का मार्ग बताया है।

उपसंहार

मानव को सदा अपने को सत्य ज्ञान में अपूर्ण, सतकर्म में अपूर्ण, सत धर्म में अपूर्ण, सत व्यवहार में अपूर्ण, सत ईश्वर भक्ति में अपूर्ण समझना चाहिए। इससे उसमें अहंकार व अभिमान की निवृति होती है और वह सत्य पूर्णता की ओर अग्रसर होता है। वेद और वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ और आर्य समाज के सिद्धान्त यही शिक्षा देते हैं।

पृष्ठ 4 का शेष-मनुष्य व समाज की प्रमुख शत्रु अविद्या

अनेक निष्पक्ष व ज्ञानी लोगों ने विगत लगभग डेढ़ शताब्दी में अपने विवेक व ज्ञान के अनुसार वैदिक धर्म को स्वीकार किया है। यह काम जिस पैमाने पर होना चाहिये था उतना नहीं हुआ जिसका कारण अविद्या ही मुख्य है।

अविद्या को दूर करने के उपायों पर विचार करते हैं तो लगता है कि विश्व में वेदों की विचारधारा का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिये। वेदों के प्रचार में शिथिलता से ही सभी मत-मतान्तर उत्पन्न हुए हैं और आज भी उनमें वेदानुसार सुधार न होने का मुख्य कारण अविद्या ही है। जब तक यह अविद्या समाप्त नहीं होगी, मनुष्य आपस में मत-मतान्तरों में विभाजित रहकर आरोप-प्रत्यारोप व धर्मान्तरण जैसे कार्य करते रहेंगे जैसे कि वह विगत लगभग दो-ढाई हजार वर्षों से करते आ रहे हैं। यह सन्तोष की बात है कि आज योग का प्रचार बढ़ रहा है और आज पूरा विश्व, अपवादों को छोड़कर, योग की श्रेष्ठता व उपयोगिता को स्वीकार कर चुका है। इसी प्रकार आने वाले समय में वेदों का यदि योग की ही तरह से कोई प्रचार करे, तो वह भी देश विदेश में स्वीकार्य हो सकता है। ऐसा होने पर ही अविद्या कम होगी व दूर होगी। सबसे बड़ी बाधा मत-मतान्तरों के लोगों व उनके आचार्यों की है जो सच्चे व विज्ञान सम्मत वेद मत व सत्यार्थप्रकाश आदि का अध्ययन करना ही नहीं चाहते। जिस प्रकार विज्ञान में एक विषय में एक ही सिद्धान्त होता है, परस्पर विरुद्ध विचार तो सिद्धान्त कदापि नहीं हो सकते, इसी प्रकार धर्म में भी सत्य सिद्धान्त एक ही होता है। जिसका निर्धारण केवल वेद व वैदिक साहित्य के अध्ययन सहित योगाभ्यास व समाधि आदि को सिद्ध कर किया जा सकता है। इसका दूसरा उपाय हमें दिखाई नहीं देता। महर्षि दयानन्द जी का भी ऐसा ही मत था जो कि वेदों के मर्मज्ञ और योग समाधि को सिद्ध किये हुए थे। हमने देखा है कि जब हम किसी अन्य मत के व्यक्ति से सैद्धान्तिक चर्चा करते हैं तो उनके पास सबल तर्क न होने पर भी वह सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज पर दोषारोपण करते हैं। यह भी कह देते हैं कि संसार में केवल एक वेद ही नहीं अपितु अन्य ग्रन्थ भी हैं। अनेक व्यक्ति पुराणों में निहित सभी बातों को भी पूर्ण सत्य स्वीकार करते हैं जबकि प्रायः सभी पुराणों की मान्यताओं व कथनों में परस्पर विरोध होने सहित वह ईश्वरीय ज्ञान वेदों के भी विरुद्ध हैं। ऐसे मित्रों को वैदिक सिद्धान्तों को समझाना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव ही होता है। अतः हमें व आर्यसमाज को जन-जन में तीव्रता से वेदों का प्रचार करने की न केवल योजना बनानी चाहिये अपितु इस कार्य को सफल करने में पूरा बल लगाना चाहिये। यदि इसमें चूक होगी तो परिणाम वहीं होगे जो अतीत में हुए व वर्तमान में हो रहे हैं। वेदानुकूल जीवन ही अभ्युदस व निःश्रेयस की प्राप्ति का मार्ग है और इतना मार्ग इन उपलब्धियों से दूर ले जाने वाले हैं। महर्षि दयानन्द ने विद्या तथा अविद्या की चर्चा करते हुए आर्योद्देश्यरत्नमाला लघु ग्रन्थ में कहा है कि जिससे ईश्वर से लेके पृथिवीपर्यन्त पदार्थों का सत्य ज्ञान वा विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, उनका व्यवहार करना होता है उसका नाम 'विद्या' है। अविद्या उसे कहते हैं जो विद्या से विपरीत है और साथ ही भ्रम, अन्धकार और अज्ञान रूप है। यजुर्वेद के 40वें अध्याय में कहा गया है कि विद्या से अमृत अर्थात् अमृत की प्राप्ति होती है। इसका अर्थ है कि अविद्या, विपरीत व मिथ्या ज्ञान होने से मोक्ष प्राप्ति में बाधा पड़ती है। मनुष्य अविद्या के कारण कर्मफल बन्धन में फंस कर जन्म जन्मान्तर में दुःख भोगता है।

अतः अविद्या मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु सिद्ध होती है परन्तु इससे ग्रस्त मनुष्य को पता नहीं होता कि वह अविद्याग्रस्त व रोगी है। क्या यह बहुत बड़ा आश्चर्य नहीं है ? इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

आर्य समाज धूरी वेद कथा एवं विश्व शान्ति कल्याण गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज धूरी में दिनांक 1 दिसम्बर से 4 दिसम्बर 2016 दिन रविवार तक बड़ी धूम-धाम और हर्षोल्लास के साथ वेद कथा विश्व शान्ति गायत्री महायज्ञ प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद कुमार आर्य की अगुवाई में और समाज सेवी महाशय प्रतिज्ञापाल जी की अध्यक्षता में मनाया गया। इस शुभ अवसर पर सुन्दर नगर (हिमाचल) प्रदेश के आर्य जगत के महान विद्वान महात्मा चैतन्य मुनि जी, वैदिक विदुषी माता सत्यप्रिया यति जी वैदिक प्रवक्ता के रूप में आमंत्रित थे तथा उत्तर प्रदेश सहारनपुर से भजनोपदेशक पं. सुखपाल आर्य उपस्थित थे। यज्ञ का समय प्रात 8:00 से 11:30 तक सायं का समय 8:00 बजे 10:00 तक भजन एवं प्रवचन होते थे। यज्ञ के ब्रह्म शैलेश कुमार शास्त्री जी थे, प्रतिदिन सुबह शाम-महात्मा चैतन्य मुनि जी का प्रवचन और सुखपाल जी का भजन, माता सत्यप्रिया मति जी का भी भजन होते थे।

महात्मा जी के प्रवचन वेद मन्त्रों में मानव जाति के उद्धार के लिए दी गई शिक्षाओं पर और देश तथा समाज की अनेकों समस्याओं को सुलझाने के लिए होते थे। स्वामी दयानन्द के मार्ग पर चलने से मानव जाति का निर्माण एवं उत्थान की बात कही। दिनांक 1 दिसम्बर से 4 दिसम्बर तक विशेष आकर्षक विद्यार्थियों एवं सभी सदस्यों आर्य समाज के महामन्त्री रामपाल आर्य ने 30 मिनट के समय में धार्मिक, राष्ट्रीय, वैदिक संस्कारों से और सामान्य ज्ञान को बढ़ाने हेतु प्रश्नोतरी की गई। विजेताओं को इनाम भी दिये गये।

पूर्णाहुति के अवसर पर मुख्य मेहमान भारत भूषण मेनन एल.एल. वी. बरनाला से पधारे। उनका भी फूलमाला से स्वागत किया गया। गायत्री महा यज्ञ के यज्ञमान आर्य समाज के प्रधान प्रहलाद आर्य, उनकी पत्नी, कोषाध्यक्ष विवेक जिन्दल सोनम जिन्दल, विकास जिन्दल, अल्का जिन्दल, अशोक जिन्दल, शिमलारानी, महाशय सोम प्रकाश आर्य, उर्मिला आर्या, वासुदेव आर्य अमित आर्य, ष्ट.त्र.रू करनाल (हरियाणा) रमेश आर्य, कृष्णा आर्या अशोक गर्ग, कर्म चन्द आर्य धर्मशीला देवी आर्या, कार्यकारी प्रधान विरेन्द्र कुमार गर्ग, उपप्रधान श्री श्याम आर्य, सतीश आर्य पवन कुमार गर्ग, वचन लाल गोयल, सुरजीत सरीन उनकी धर्म पत्नी विकास शर्मा, प्रि. आर. पी. शर्मा संरक्षक, अरूण गर्ग, हरवीर सिंह, राजीव मोहिल, सतीश टंड, सतीश मितल, राजेश आर्य, विजय आर्य, राजेश आर्य, प्रदीप आर्य, सुरिन्द्र सिंगला, श्री बी. एल कालियां प्रि. आर्य सी. सै. स्कूल, प्रि. श्रीमति मोनिका वाटस, निशा मित्तल, प्रि. महाशय चेतराम टैक्नीकल इन्सटीचयूट, स्त्री आर्य समाज के सभी सदस्य कृष्ण आर्या, मधुरानी मंत्रानी, कुसुम गर्ग. कोषाध्यक्षा, दर्शनादेवी उपप्रधाना, उर्मिला आर्या, निगम पाल प्रचार मंत्राणी एवं सभी आर्य समाज के सदस्यो एवं अधिकारी गण ने इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़ कर भाग लिया इसके बाद शान्ति पाठ किया गया एवं सभी को ऋषि प्रसाद लंगर वितरण किया गया। धन्यवाद

प्रधान, प्रहलाद कुमार आर्य आर्य समाज, धूरी

24वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का 24 वां दिनांक 19 दिसम्बर से 25 दिसम्बर 2016 तक बड़े ही उत्साहपूर्वक एवं हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् महात्मा चैतन्यमुनि जी , आचार्य सानन्द जी के प्रवचन तथा माता सत्याप्रिया याति एवं श्री दिनेश आर्य पथिक जी के मधुर भजन होंगे। आप सभी ईष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। आपके आने से उत्सव की शोभा बढ़ेगी और हमारा उत्साह बढ़ेगा।

-हर्ष लखनपाल मन्त्री आर्य समाज

पृष्ठ 2 का शेष-आर्ष ग्रन्थ ही क्यों पढ़ें ?

ईश्वर या आत्मा जैसे पदार्थ हमारे क्षेत्र से बाहर हैं। इसी प्रकार बिग बैंग थ्योरी पर विज्ञान कहता है कि कहीं कुछ नहीं था। फिर अचानक बिग बैंग (तीव्र विस्फोट) हुआ और सूर्य आदि असंख्य पिण्ड उसमें से निकलकर आकाश में बिखर गए (फैल गए)। भला जब कुछ नहीं था तो विस्फोट कैसे हुआ ? पिण्ड कहां से निकल आये ? ये कैसे घूमने लगे? इसमें गति एवं दिशा कहां से आई और वे बदली क्यों नहीं ? पिण्ड निकलने बन्द कैसे हो गए ? पिण्डों पर जीवन होने-न-होने का भेद कैसे उत्पन्न हुआ ? इसे किसने देखा या सुना ? बिना देखे-सुने बोलना किस विज्ञान का काम है?

आदम के पुतले में श्वास फूंका-विदेशों में पनपे सम्प्रदायों की मान्यता है कि विश्व-निर्माता ने मिट्टी से आदम का पुतला बनाया और उसमें अपना श्वास फूंका। इस पर पं. गंगा प्रसाद 'उपाध्याय' प्रश्न उठाते हैं कि वह श्वास ईश्वरीय गुणों से पूर्ण था या अग्नि के स्फुलिंग की भांति ईश्वर का खण्ड था ? वस्तुत: ऐसे श्वास की मान्यता अनार्ष है और अग्राह्य है।

अन्ध विश्वास-हमारे समाज में ऐसी बातें भरी पड़ी हैं कि छींक आ जाए या बिल्की रास्ता काट दे तो काम बिगड़ जाता है। ये अन्ध विश्वास भारत ही नहीं, विश्व के कोने-कोने में किसी न किसी रूप में पाये जाते हैं। कहीं पर 'उस दिन मुर्दे खड़े हो जायेंगे' ऐसा कहा जाता है तो कहीं पर 'आकाश को उठाए हुए' किसी देवता को माना जाता है। यूरोप के अनेक देशों में '13' नम्बर का मकान नहीं होता और 12-12ए-14 प्रणाली से नम्बर डाले जाते हैं। वह भी अनार्ष पुस्तकों की खरपतवारें हैं।

चमत्कार-उसने मुर्दे को जीवित कर दिया, वह पीतल को सोना बना देता है, उसका नाम लेने से ट्रेन रुक गई, उसने पानी के छींटे दिये तो भैंस गर्भवती हो गई, उसने खांसा तो मुंह से अंगूठी निकल आई, इत्यादि बातें चमत्कार के रूप में देश-विदेश में प्रचारित हैं। वे सब सृष्टि-विरुद्ध होने से असम्भव हैं। प्राय: 1% सत्य में 99% असत्य को ऐसी चतुराई से मिलाया जाता है कि भोले लोग चकित हो जाते हैं। ये सब अनार्ष कथायें हैं और इनसे होने वाली जन-धन की अपार हानि से मानव-समाज को बचाना परोपकारी विद्वानों का आवश्यक धर्म है।

वेद के ये वेद भाष्य-स्वामी विरजानन्द और महर्षि दयानन्द गुरु-शिष्य की जोड़ी ने वेद के अनार्ष भाष्यों और आर्ष ग्रन्थों की अनार्ष व्याख्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है। आज भी वेदोपनिषदों के अनार्ष अर्थ आर्ष अर्थों की तुलना में सैंकड़ों गुना अधिक प्रचारित हैं। यदि वेद के आर्य प्रचारक अन्य कार्यों को छोड़कर इसी कर्म-द्वय में लग जाएं अर्थात् 'अनार्ष ग्रन्थों की रोकथाम' और 'केवल आर्ष ग्रन्थों का पाठ' हो, तो एक पीढ़ी की कार्यावधि में सत्य-क्रान्ति हो जाए।

वेद कैसे पढ़ें ?-(1) वेद पढ़ने का सर्वोत्तम प्रकार है अंग-उपांग सहित क्रमानुसार वेद पढ़ना। इस प्रकार लगभग 25 वर्ष में व्यक्ति वेदज्ञ बन सकता है। (2) वेद में 20379 मन्त्र हैं। कोई एक मन्त्र प्रतिदिन पढ़े तो 56 वर्षों में सब मन्त्र भली प्रकार पढ़ सकता है। इतनी महती विद्या के लिए 56 वर्ष अति दीर्घ अवधि नहीं हैं। (3) कोई प्रति सप्ताह एक मन्त्र पढ़े तो एक वर्ष में 52 और 50 वर्ष में 2600 मन्त्र पढ़कर अच्छा विद्वान बन सकता है। (4) प्रति रविवार मन्त्र का चौथाई भाग या प्रति मास एक मन्त्र समझने वाला सत्मनुष्य भी 50 वर्ष में 600 मन्त्र समझकर इतना महान् बन सकता है कि ऐसे 1000 मनुष्य मिलकर संसार को स्वर्ग बना सकते हैं।

वेद की कुछ शिक्षायें-वेद में असंख्य शिक्षायें हैं और एक मन्त्र की गहराई असीम है। तथापि 10 शिक्षायें प्रस्तुत की जा रही हैं-

(1) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।

-ऋग्वेद 1/164/20

संसार में तीन अनादि तत्त्व हैं-ईश्वर, जीव और प्रकृति, जैसे वृक्ष (प्रकृति) पर बैठा पक्षी (ईश्वर) दूसरे पक्षी (जीव) को फल खाते देख रहा हो।

(2) समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्तमेषाम्।

-ऋग्वेद 10/191/3

आर्य लोगों के ज्ञान, विचार, संस्कारी और सामूहिक निर्णय एक समान हों।

(3) अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम। इदमहनृतात् सत्यमुपैमि।।

-यजुर्वेद 1/5

हे ईश्वर ! मैं असत्य-त्याग और सत्य पालन का संकल्प ले रहा हूं; आप इसे पूर्ण कीजिए।

(4) यथेमां वाचं कल्याणी-मावदानि जनेभ्य:।

-यजुर्वेद 26/2

वेद बिना भेदभाव सब मनुष्यों के पढ़ने हेतु है।

(5) न तस्य प्रतिमाऽअस्ति।

-यजुर्वेद 32/3

वेद बिना भेदभाव सब मनुष्यों के पढ़ने हेतु है।

(5) न तस्य प्रतिमाऽअस्ति।

-यजुर्वेद 32/3

ईश्वर की कोई प्रतिमा नहीं हो सकती।

(6) ईशावास्यमिदं सर्वम्।

-यजुर्वेद 40/1

ईश्वर प्रत्येक जड़ चेतन में व्यापक है।

(7) अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्। -यजुर्वेद 40/16

हे ईश्वर ! आप ऐसी पवन बहाएं जो मनुष्य गौ, अश्व आदि सभी प्राणियों के लिए सुखद हो।

(9) अनुव्रत: पितु पुत्रो मात्रा भवतु संमना:।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।

-अथर्ववेद 3/30/2

पति पत्नी से शान्तिपूर्वक और पत्नी पति से मधुर वाणी बोले च सन्तान पिता के अनुकूल आचारण वाली और माता की प्रिय हो।

(10) स्तुतामया वरदा वेदमाता प्रयोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।?

आयु: प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यां दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

मैं प्रेरणा देने वाली और द्विजों को पवित्र करने वाली वेदमाता की सुति करता हूं। इससे मुझे आयु, बल, सन्तान, पशु-साधन, यज्ञ, धन, आत्मज्ञान मिले और अन्त में मोक्ष।

इस प्रकार अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करते हुए मोक्ष तक पहुंचने के लिए सब मनुष्यों को आर्ष गरन्थों का ही स्वाध्याय करना चाहिए।

रक्तदान शिविर का सांसद ओम बिरला ने किया विमोचन

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाज महर्षि दयानन्द नगर, तलवंडी जिला कोटा द्वारा एक बहुत श्रेष्ठ परोपकार का कार्य किया जा रहा है। आज के युग में रक्तदान ही महादान है। आज रक्त की बड़ी आवश्यकता है जिसके निमित्त इस रक्तदान शिविर पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। मैं आर्य समाज तलवंडी के इस रक्तदान शिविर के संयोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा एवं कोट में रक्तदान क्रान्ति के अग्रदूत डा. वेद प्रकाश गुप्ता, आर.सी. आर्य व उनकी पूरी टीम को बधाई देता हूं। आर्य समाज इस प्रकार के कार्यों से जो समाजसेवा कर रहा है वह सराहनीय है। उक्त विचार आर्य समाज तलवंडी में 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर आयोजित रक्तदान शिविर में रक्तदान अपील का फोल्डर जारी करते हुये सांसद ओम बिरला ने व्यक्त किये।

फोल्डर विमोचन के अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुन देव के नेतृत्व में आर.सी.आर्य, भैरों लाल शर्मा, डा. वेद प्रकाश गुप्ता, आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, कैलाश बाहेती, जे.एस. दुबे, श्रीचंद गुप्ता, वाई.आर. कुमारा, शिवदयाल गुप्ता, राधा वल्लभ राठौर, श्रीमती सुमन बाला सक्सेना, गुमान सिंह कुशवाहा, आर्य पुरोहित ओंकार सिंह एवं मनु आर्य आदि शक्ति नगर स्थित सांसद ओम बिरला के निवास पर पहुंचे। इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान व रक्तदान शिविर संयोजक ने बताया कि इस कार्यक्रम में सभी वर्गों के महिला एवं पुरुषों को जोड़ा जा रहाहै तथा विशाल स्तर पर इसका आयोजन किया गया है जिसमें अधिक से अधिक रक्तदान प्राप्त किया जा सके। **-मंत्री आर्य समाज**

37वां वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर लसूड़ी मोहल्ला बस्ती दानिशमन्दा का 37 वां वार्षिक उत्सव दिनांक 18 दिसम्बर से 25 दिसम्बर 2016 तक धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर 18 से 24 तक दिसम्बर तक प्रात: 5:00 से 7:00 बजे तक प्रभातफेरियों का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री जी के प्रवचन तथा श्री सुरिन्द्र सिंह गुलशन जी के मधुर भजन होंगे। आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। आपके आगमन से कार्यक्रम की शोभा बढ़ेगी। भजन व प्रवचन का कार्यक्रम 22-12-2016 से 24-12-16 तक रात्रि 8:00 से 10:00 बजे तक रहेगा। रोजाना लंगर का भी प्रबन्ध है।

-कमल भारती महामन्त्री आर्य समाज

केवल आर्य संस्कृति ही मानव को श्रेष्ठ इन्सान बना सकती है

–प्रो. स्वतन्त्र कुमार

वेद प्रचार एवं भजन संध्या के सम्पन्न समारोह के अवसर पर भजन प्रस्तुत करते हुए श्री जगत वर्मा जी तथा उनके साथ विराजमान पूर्व कुलपति एवं उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा जबकि साथ के चित्र में भजन सुनती हुई बहनें।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली मानव को अच्छा डाक्टर इन्जीनियर या वैज्ञानिक तो बना सकती है मगर अच्छा मानव नहीं बना सकती और अच्छा इन्सान बनने के लिए हमें अपनी प्राचीन वैभवशाली वैदिक संस्कृति को ही अपनाना होगा। यह विचार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार ने आर्य समाज औहरी चौक बटाला द्वारा वेद प्रचार व भजन संध्या के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कहें।

प्रो कुमार ने कहा कि भारतीय सभ्यता पूरी तरह से विज्ञान पर आधारित है और इस सभ्यता के अनुसार हम जो भी अपने रहन सहन में कार्य करते है। वह पूरी तरह से वैज्ञानिक है मगर दुख की बात है कि अंग्रेजी काल में हमारी गुरुकुल की शिक्षा पद्धति को तहस-नहस कर दिया गया और हम वैज्ञानिक आधार को भूल गए, मगर आर्य समाज के संस्थापक युग पुवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमें उन मूल्य को जानने के लिए पुनः वेद शिक्षाओं को अपनाने की प्रेरणा देकर एक सराहनीय कार्य किया है।

उन्होंने कहा वेद ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है जिसे परमपिता परमात्मा से सृष्टि की रचना से पूर्व ही इस मानव मात्र के कल्याण हेतु स्थापित कर दिया था। प्रो. कुमार ने कहा कि दुख की बात है कि आज हमारे देश में रामायण पढ़ने वालों की तो कमी नहीं मगर रामायण की शिक्षाओं पर चलने वालों की निरन्तर कमी हो रही है आवश्यकता है कि हम रामायण व गीता पढ़ने के साथ उसमें दी गई शिक्षाओं पर भी अमल करे।

समापन समारोह में आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. जगत वर्मा ने वेद शिक्षाओं पर आधारित प्रभुभक्ति व राष्ट्र भक्ति के भजन गाकर लोगों को मुग्ध कर दिया। उससे पूर्व आर्य प्रतिनिधी सभा के महोपदेशक पं. विजय कुमार शास्त्री के ब्रह्मत्व में विश्व शान्ति हेतु हवन यज्ञ का आयोजन भी किया गया। जिसमें सैंकड़ों लोगों ने आहुतियां प्रदान की।

इस अवसर पर विजय अग्रवाल, अशोक अग्रवाल बलविन्द्र मेहता पवन शर्मा, भूषण बजाज, शक्ति शर्मा, सतप्रकाश बहल, कस्तूरी लाल सेठ, जसविन्द्र मेहता, प्रो. सोहन लाल प्रभाकर, डा. अश्वनी कांसरा, वीरेन्द्र विग, प्रेमनाथ शर्मा, अशोक अग्रवाल, हरिओम शर्मा भी उपस्थित थे। आर्य समाज के प्रधान प्रविन्द्र चौधरी ने आए हुए सभी गणमान्य लोगों का इस कार्यक्रम में भाग लेने पर आभार व्यक्त किया।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।